नाना की मृत्यु के बाद दीना और उनके छोटे भाई के पालन पोशण और शिक्षा की जिम्मेदारी स्नेहमयी मामा और मामी ने ले ली। इस बीच उनके मामा जी को क्षय रोग ने घेर लिया। 11 वर्श के दीनदयाल ने उन्हें लखनऊ इलाज हेतु ले जाने की जिम्मेदारी उठायी।

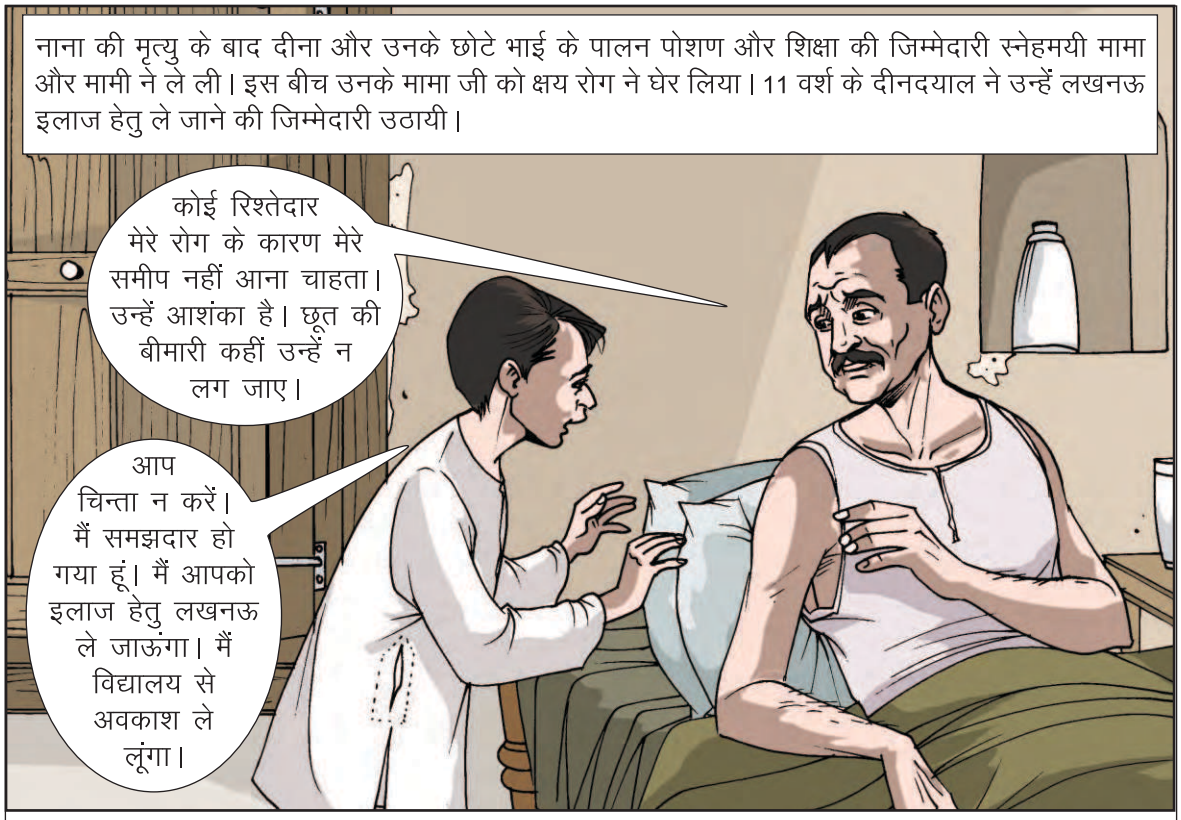

एक महीना विद्यालय से अवकाश रखने के बावजूद दीनदयाल जी कक्षा में प्रथम आए।